आधुनिक ढंग से कृषि करता है आधुनिक किसान, –बढ़ा है आर्गेनिक खेती की ओर रुझान

डॉ. होशियार सिंह
महेन्द्रगढ़, हरियाणा

धरती का सीना चीरकर अन्न पैदा करके धरा के इंसान का पेट पालने वाला किसान, अब पुरानी परंपरागत कृषि पद्धतियों से मुक्त होकर, नई कृषि पद्धतियों का सहारा लेकर कृषि करने लगा है। हल से लेकर बैलगाड़ी तक को ही बदल लिया है। कृषि करने की आधुनिक तकनीकों से परिपूर्ण होकर कृषि करने लगा है।

एक जमाने में किसान देशी एवं लकड़ी का हल ही काम में लेता था। हल को खींचने के लिए वह दो बैलों की जोड़ी प्रयोग में लाता था। बाद में बेहतर हल आ जाने से किसान ने लोहे का बेहतर हल प्रयोग करना, तत्पश्चात ट्रैक्टर का प्रयोग करना सीख लिया। किसान की आवश्यकताएं बढ़ीं तो उसने फसल पैदावार बढ़ाने की ओर ध्यान देना शुरू किया। वह खेतों में गोबर की खाद की जगह रासायनिक खाद का प्रयोग करने लगा। फसल चक्रण विधि से आधुनिक कृषि पद्धतियों का सहारा लेना शुरू कर दिया। किसान के खेत में पैदावार पहले से दोगुनी होने लगी। आज खेत में किसान के पास पैदावार बढ़कर दो गुना से भी अधिक हो चुकी है।

किसान का ध्यान आधुनिक कृषि की ओर गया। आधुनिक कृषि में जहां नकदी फसलों की मांग बढ़ी तो उसने नकदी फसल उगानी शुरू कर दी और जब परंपरागत कृषि के स्थान पर दूसरी फसलों की मांग बढ़ी तो वह पीछे नहीं हटा। किसान ने अपने खेत में सब्जी उगाने तत्पश्चात आर्गेनिक कृषि करना ही शुरू कर दिया। यही कारण है कि जिन खेतों में धान उगाना कठिन है, वहां पर भी उसने धान उगा डाला। किसान किसी वक्त गेहूं, जौ, ज्वार, मक्का एवं चने के अलावा दलहन जाति की फसलें अधिक उगाता था किंतु अब तो किसान ने उन फसलों के स्थान पर सरसों, मटर, ग्वार, मूंगफली, की फसल अधिक उपजाना शुरू कर दिया है। अब तो किसान मिश्रित फसल पर पहुंच गया है।

किसान कृषि कार्यक्रमों से जानकारी लेता हुआ अपने खेत पर नए–नए प्रयोग करने में लगा रहता है। यही कारण है कि किसान सभी आधुनिक कृषि यंत्रों से लेकर उन्नत किस्म के बीज तक का प्रयोग करने लगा है। किसान आधुनिक कृषि के साथ–साथ आधुनिक यंत्रों का उपयोग भी कर रहा है। किसान ने आधुनिक कृषि द्वारा बेहतर आय प्राप्त की है।

क्या कहते हैं किसान एवं कृषि अधिकारी

अजी इसराना जिन्होंने आर्गेनिक सब्जियां उगाकर लाखों रुपए कमाए हैं और विगत 3 वर्षों से इस कार्य में लगे हुए है। उनका कहना है कि वे परंपरागत खेती से बेहद तंग आ चुके थे, इसलिए वे 6 एकड़ जमीन में सब्जियां उगा रहे हैं, और सब्जी की बेहद मांग है। जिसके चलते उन्होंने काफी मुनाफा कमाया है। परंपरागत खेती की तुलना में यह अधिक लाभप्रद है। गजराज सिंह मोड़ी जिन्होंने आर्गेनिक सब्जियों के साथ साथ मटर तथा आर्गेनिक गेहूं उगाया है। वे कुछ वर्षों से इस काम में लगे हुये हैं। उनका कहना है कि वे फसलों पर किसी प्रकार की दवा का छिड़काव नहीं करते तथा फसल सेहत का ध्यान रखते हैं, इसलिए उनकी सब्जी की मांग अधिक है। वे बागवानी की ओर भी ध्यान दे रहे हैं।

सूबे सिंह कनीना के एक ऐसे किसान हैं जो लंबे समय से आर्गेनिक खेती कर रहे हैं। इन्होंने आर्गेनिक खेती के साथ–साथ देशी फल, सब्जियां उगाने में भी नाम कमाया है। इनका कहना है कि परंपरागत खेती करते–करते वे थक चुके हैं, अब बदलाव की जरूरत है। ऐसे बदलाव करके उन्होंने न केवल अच्छा मुनाफा कमाया है, अपितु वे चाहते हैं कि सभी किसान आर्गेनिक खेती की ओर ध्यान दें।

महावीर सिंह करीरा एकमात्र ऐसे किसान है जिन्होंने कृषि के साथ–साथ बागवानी और बागवानी पर आधारित विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ जैसे अचार, मुरब्बा, बाजरे के बिस्कुट, बेर की कैंडी, आंवला के लड्डू आदि बनाए हैं।

उन्होंने बताया कि इस प्रकार के काम से वे बेहद खुश हैं तथा उनकी अच्छी खासी आय हुई है। अपने खेत से फल सब्जियां उगाकर उनसे विभिन्न उपयोगी पदार्थ बना रहे हैं। प्रगतिशील किसान एवं सरकार द्वारा सम्मानित महाबीर सिंह का कहना है कि किसानों को बागवानी की ओर भी ध्यान देना चाहिए।

कृषि सलाहकार डा देवराज यादव का कहना है कि आज का किसान जागरूक हो गया है। परंपरागत खेती करते–करते किसान का मन ऊबने लगा तो आजकल उसने बागवानी तथा फल सब्जियों को उगाने का कार्य किया। अब तो किसान फूलों की भी खेती करता है। इस प्रकार किसान नकदी फसलों में भी बेहतर नाम कमा रहा है। उन्होंने कहा कि आधुनिक किसान वास्तव में अपनी सेहत का ध्यान देता है, जिसके चलते आर्गेनिक खेती की ओर ध्यान दे रहा है। निसंदेह

उनका भविष्य उज्ज्वल बनता जा रहा है। परंपरागत खेती की बजाय वह आधुनिक यंत्रों से खेती करता है।

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार हरित क्रांति ने देश में खेती की तस्वीर को भले ही बदल दिया हो लेकिन कीटनाशक और उर्वरकों के सहारे ज्यादा पैदावार लेने के लालच में कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियां बढ़ती जा रही हैं। यही कारण है कि हजारों साल से अजर अमर मिट्टी की सेहत कुछ ही सालों में इस कदर खराब हो चुकी है कि वह खेती के लायक ही नहीं रही या यह भी कह सकते हैं कि बांझ होती जा रही है। इस समय न तो धरती में रोगों से लड़ने की क्षमता बची है और ही इस में पैदा होने वाला अन्न का उपयोग करने वालों में, और तो और उर्वरकों एवं कीटनाशकों के उपयोग ने धरती के भीतर सुरक्षित माने जाने वाले पानी को भी जहरीला बना दिया है। इससे बचने को आरओ लगाए पर उनका पानी भी खनिज का संतुलन बिगड़ने में सुरक्षित नहीं माना जा रहा है। हरियाणा की बात करें तो यहां लगातार कीटनाशक का उपयोग बढ़ रहा है। कृषि विभाग के अनुसार हर साल कीटनाशक का उपयोग बढ़ता जा रहा है।

धरती का कीट नियंत्रण तंत्र लगभग खत्म

कीटनाशक के उपयोग को खुली छूट से धरती का कीट नियंत्रण तंत्र लगभग समाप्त हो गया है और इससे प्रकृति का चक्र भी प्रभावित हुआ है। धरती पर वनस्पति को खाने वाले कीट हैं, तो उनको खा जाने वाले कीट भी हैं, जो वनस्पति को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों का शिकार करते हैं। कीटनाशकों के उपयोग से यह श्रृंखला टूट चुकी है और दूध तक में जहर के तत्व पहुंच गए हैं।

इस तरह बढ़ा उपयोग

देश में कीटनाशकों का उपयोग हरित क्रांति के बाद बढ़ता चला गया। पहले जमीन में पोषक तत्वों की मात्रा का संतुलन बनाए रखने के लिए उर्वरक का इस्तेमाल किया गया। फिर धीरे–धीरे अधिक उपज के लिए कीटनाशकों को उपयोग में लिया जाने लगा। अब स्थिति सबके सामने है कि किस तरह हम जहर के भरोसे खेती कर रहे हैं। विशेषज्ञ बताते हैं कि, रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग का पर्याप्त ज्ञान बहुत अधिक भूमि पुत्रों को नहीं है। यही कारण है कि तमाम दावों के बावजूद कीटनाशक क्षेत्र पर सरकार का प्रभावी नियंत्रण नहीं है।

यूरिया की अधिकता भी खतरनाक

जमीन में पोषक तत्वों की कमी पूर्ण करने के लिए यूरिया का उपयोग किया जाता है हालांकि इसका जरूरत से अधिक उपयोग मुश्किल पैदा कर रहा है। इससे नाइट्रोजन का चक्र बिगड़ रहा है। महेंद्रगढ़ जिले में किसानों को प्रति हेक्टेयर 50 किलो यूरिया डालने की सलाह दी जाती है। जबकि किसान नहरी सिंचित क्षेत्र में विशिष्ट रूप से, इससे कहीं अधिक मात्रा, में यूरिया का उपयोग कर रहे हैं। महेंद्रगढ़ क्षेत्र में औसतन प्रति हेक्टर 70 से 100 किलो या इससे भी अधिक यूरिया डाला जा रहा है। अधिक सिंचाई के साथ ज्यादा यूरिया से भूजल में नाइट्रेट बढ़ती है। पंजाब प्रदेश के कुछ जिलों में अधिक यूरिया के उपयोग से विपरीत प्रभाव देखने को भी मिल रहे हैं।

क्या कहते हैं विषय विशेषज्ञ

डॉ अजय यादव, एसडीओ कृषि विभाग महेंद्रगढ़, का कहना है कि, महेंद्रगढ़ जिले में जैविक खेती करने वाले बहुत कम किसान है। किसानों की जमीन धीरे–धीरे कम होती जा रही है, जिस पर किसान परंपरागत खेती करना ही अधिक पसंद करते हैं। कीटनाशकों के ज्यादा उपयोग से भूमि में प्रदूषण उत्पन्न हो जाता है। एक ही कीटनाशक बार–बार डालने या अधिक मात्रा में डालने से उसके अवशेष मिट्टी में रह जाते हैं जिससे उनके ऊपर भी प्रभाव पड़ता है। यह जीव

जंतुओं के साथ ही मानव के लिए भी नुकसानदायक होता है। इससे कई बार बीमारी भी उत्पन्न हो जाती है। जिस तरह से कीटनाशकों व उर्वरकों का प्रयोग महेंद्रगढ़ जिले में अंधाधुंध किया जा रहा है इसमें कोई दो राय नहीं रहेगी कि 10 साल बाद यह धरती बांझ हो जाएगी। किसानों को हर वर्ष गोबर की सड़ी हुई खाद डालते रहना चाहिए। फसल के अवशेषों को गला सड़ाकर उसका प्रयोग करना चाहिए। किसानों को जैविक खेती के प्रति जागरूक होना चाहिए।

डॉ. हरपाल यादव

पौध संरक्षण अधिकारी, महेंद्रगढ़ का कहना है कि हमारा देश कृषि प्रधान देश है, जिसकी अधिकतर जनसंख्या खेती को अपना आजीविका निर्वहन के साधन के रूप में प्रयोग में लाती हैं। आज से कुछ दशक पूर्व तक के समय में की जाने वाली और आज की खेती में बड़ा बदलाव आया हैं। यह बदलाव कृषि की तकनीक, साधनों एवं रासायनिक उर्वरकों के रूप में समझा जा सकता हैं। हरित क्रांति के नाम पर शुरू किया गया कृषि अभियान इसी का एक हिस्सा है। पारम्परिक तरीके की कृषि आज भी देश के ग्रामीण क्षेत्रों में की जाती है। अधिक पैदावार लेने के चक्कर में किसान अंधाधुंध उर्वरकों व कीटनाशकों का प्रयोग कर रहा है जो कहीं न कहीं धरती को बांझ बनाता जा रहा है। जिले में 1 एकड़ में अधिकतम यूरिया डालने की क्षमता 50 किलोग्राम है। इस यूरिया को डालने से इसका 60 से 70 प्रतिशत भाग ही पौधे तक पहुंच पाता है। बची हुई यूरिया 30 से 40 प्रतिशत हवा के माध्यम से उड़ जाती है।

अजय इसराणा एवं रवि प्रकाश किसान

आर्गेनिक खेती कर रहे रवि प्रकाश तथा अजय इसराणा का कहना है कि जैविक खेती का अर्थ खेती करने की उस विधि से है जिसमें किसी प्रकार के रासायनिक उर्वरक एवं कृत्रिम खाद या कीटनाशक छिड़काव का उपयोग न करके फसल को उगाया जाता है। जैविक खेती में भूमि की उर्वरता को बनाए रखने के लिए रासायनिक उर्वरकों के उपयोग की बजाय फसल चक्र, हरी खाद और कम्पोस्ट या जीव जन्तुओं की जैविक खाद का ही प्रयोग किया जाता हैं। मैंने सात एकड़ में जैविक सब्जियां उगाई हुई हैं। जैविक सब्जियां उगाते हुए मुझे तकरीबन 6 से 7 वर्ष हो गए हैं। अच्छा मुनाफा कमा रहा हूं। मैं आमजन से अपील करता हूं कि जैविक खेती को अपनाएं।

जैविक खेती में अजय ने कमाया है नाम

गेहूं और सरसों की खेती छोड़कर इसराणा का किसान अजय सिंह जैविक खेती कर रहा है। वह बेर के क्षेत्र में भी नाम कमा चुके है। जैविक खेती के लिए लोगों को भी जागरूक कर रहे है। वर्तमान में कश्मीरी एप्पल बेरी के एक सौ पौधों पर बेर तैयार हो गये हैं। किसान अजय सिंह इसराणा का कहना है कि एक तरफ हम धरती को बचाने के लिए पौधारोपण कर रहे हैं जबकि दूसरी तरफ कीटनाशकों का प्रयोग करने में लगे हुए हैं। बावजूद इसके जमीन में कीटनाशकों का प्रयोग कम होने के बजाय हर साल बढ़ता ही जा रहा है । इसी वजह से खेती योग्य भूमि भी बंजर बनती जा रही है । इस समय जमीन में मौजूद आर्गेनिक कार्बन की मात्रा भी धीरे धीरे घट रही है। जमीन की उर्वरक शक्ति को बनाए रखने के लिए जैविक खेती करनी चाहिए। अजय कस्बे के युवाओं को जागरूक करने के साथ–साथ उनकी मदद कर रहा है। इस वक्त आसपास के तकरीबन 60 किसानों का एक ग्रुप बना रखा है जिसमें सभी लोग जैविक सब्जियां उगाते है। ये सभी किसान मार्केट में बिक रही जहरीली सब्जी के स्थान पर जैविक सब्जी बेचने में लगे हुए हैं। जैविक सब्जियां उगाने का काम दो वर्ष पहले डेढ़ एकड़ जमीन में सब्जी टमाटर, गोभी एवं बैंगन से किया था, जिसमें सारा खर्चा निकाल कर 1 लाख 70 हजार की बचत हुई। डा मनदीप यादव तत्कालीन जिला बागवानी अधिकारी से भी उन्हें भरपूर सहयोग मिला। वर्तमान में उन्होंने बैंगन, ककड़ी, प्याज, मिर्च,टमाटर, एप्पल बेर, पालक, टिंडा व नींबू के पौधे लगाए हुए हैं। इस प्रकार वे मिश्रित खेती कर रहे हैं। छह एकड़ में उन्होंने सब्जी उगा रखी है, और बेहतर आय मिल रही है। पैदावार शुरू हो गई है। उन्होंने कश्मीरी एप्पल सहित 273 बेरी के पौधे उगा रखे हैं जो फल दे रहे हैं। जैविक खेती करने वाले किसान अजय सिंह ने बताया कि वह ट्रैक्टर ट्राली के माध्यम से गांव गांव जाकर आर्गेनिक सब्जियां बेचता है। आर्गेनिक सब्जियों के दाम रूटीन की सब्जियों से एक दो रुपया कम ही रखता है।

वर्तमान में तरबूज दो एकड़, ककड़ी आधा एकड़, बैंगन आधा एकड़, टमाटर एक एकड़, मिर्च आधा एकड़, देसी टिंडा, घिया, तोरई, पेठा एक एकड़, पत्ता गोभी एवं प्याज एक एकड़ में उगाई हुई हैं। उन्हें प्रशासन द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। आधा दर्जन किसान उनके पदचिह्नों पर चल रहे हैं। कश्मीरी एप्पल बेरी के पौधे अभी भी बेर दे रहे हैं।

हिंदी में अखिल भारतीय भाषा बनने की क्षमता है।

–राजा राममोहन राय